ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 93-94

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

# पं0 श्रीनिवास शुक्ल की रचनाओं में मानवीय मूल्यों की अवधारणा

1. भारती तिवारी
2. डॉ0 कुंजीलाल पटेल

1. शोध अध्येत्री– पी–एच.डी., हिन्दी विभाग, 2. शोध–निर्देशक–सह प्राध्यापक, हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केन्द्र,महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म0प्र0) भारत

Received-13.10.2022, Revised-20.10.2022, Accepted-24.10.2022 E-mail: bhartioptimistic@gmail.com

***सारांशः*** ***श्रीनिवास शुक्ल जी छतरपुर के ही नहीं, अपितु पूर्ण धरा भारत के एक ऐसे जगमगाते माणिक्य हैं, जिन्हें निर्विद रूप से ही साहित्य मर्मज्ञ कहा जा सकता है। शुक्लजी का लेखन मन और आत्मा का लेखन है। उनकी सम्पूर्ण रचना संसार के अवलोकनोपरांत उनका जो व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है, वह एक सच्चें साहित्य साधक को मुखित करता है। साहित्यकार ने मानवीय मूल्यों की स्थापना पर बल दिया, जो निश्चित ही मानव जाति के कल्याण के लिए मील का पत्थर साबित होगीं।***

***कुंजीभूत शब्द– माणिक्य, साहित्य मर्मज्ञ, मन और आत्मा, अवलोकनोपरांत, साहित्य साधक, मानव जाति, कल्याण ।***

**प्रस्तावना–** वर्तमान युग संत्रासों का युग है। आज मनुष्य सभ्यता की नई ऊँचाईयों को दिनों–दिन छू रहा है। वर्तमान समय में मनुष्य मात्र अपने स्वार्थों की सिद्धि में लगा है, इनकी प्राप्ति के लिए वह छल, बल, कपट को धारण करने में भी नही संकोच करता है। सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण की तो बात ही क्या की जाये आज तो वह अपने कुटुंब में भी संस्कार स्थापित नही कर पा रहा है।

आज मानव 'जड़ता का वरण' करता जा रहा है। दूसरों के दुःख देखकर उसकी सम्वेदनाएँ नष्ट होती जाती है।

**"बज्र कहीं पर गिरे चोट हमकों लग जाती है**
**हर कुटिया का व्यथा हमारे मन को टंक जाती है।"[1]** **अक्षरों की आँच, पृष्ठ 7**

व्यक्ति के गुणों की पहचान मनसः वाचः और कर्मणः से परिभाषित होती है। उसकी चितृवृत्ति उसके अंतस की परिचायक है। कवि का कृति कर्म उसके सम्पूर्ण सरोकरों को प्रदर्शित कर देता है। कवि समाज में किस प्रकार मानव मूल्यों को स्थापित करना चाहता है यह उसके रचनाओं का अनुशीलन करने से ज्ञात होता है।

अपने रचना संसार से वह सम्पूर्ण मानव संसार को संस्कारित करता है। शुक्लजी की रचनाओं में यह गुण प्रबल है वे कहते हैं कि हमें हमेशा यह ध्यान रखना होगा कि हमारा अतीत गौरवशाली था। हमें संसार को अंधेरे से उजाले की ओर लाना है।

**"हम उज्जवल की संसति हैं रहे सदा यह ध्यान**
**मूल्यों की सूर्योदय करना, लाना स्वर्ण विहान**
**नित्य चेतना से संभव हो चिंतन, अनुसंधान**
**मरूथलों में भी उतारना है खिलते उद्यान**
**फिर उद्यम से ठहरावों को करना है गतिमान**
**हम तुमकों मिलकर रचना है, चिर–नवीन प्रतिमान।"** **अक्षरों की आँच, पृष्ठ 6**

कवि कहता है कि मूल्यों के निर्माण के लिए मानव का चेतना युक्त होना आवश्यक है यदि वह साहस से धर्म सम्मत कर्म करे तो मरूथलों में भी उद्यान उगा सकता है। जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी कठिन परिश्रम है तभी नए अनुसंधान हो सकते हैं। इन्हीं मानवीय मूल्यों को जागाने का प्रयास शुक्लजी अपनी रचनाओं में करते हैं।

डॉ0 धर्मवीर भारती अपने कथन में वर्तमान में मानव मूल्यों की स्थापना में यह कथन कहते हैं। आधुनिक युग के मानव जीवन में मनुष्य की अन्तरात्मा का ध्वंस हो चुका है। इस परिस्थिति में हमारी आन्तरिक स्थिति की प्रगति हमारी सृजनात्मकता, साहित्यिकता और सांस्कृतिक गतिशीलता के अभाव में मनुष्य भीतर से खोखला हो गया है। मनुष्य को अंतरात्मा की पुनः प्रतिष्ठा के लिए जिस विवेक और साहस की आवश्यकता है उन जीवन मूल्यों का पोषण करने वाला सबसे सशक्त साधन साहित्य ही हो सकता है। डॉ धर्मवीर भारती ने लिखा है "सजृन, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में प्रगति की धारणा अन्ततोगत्वा आन्तरिक ही हो सकती है। प्रगति (नियति का क्रमिक साक्षात्कार) हमसे निरपेक्ष नही है। वह हमसे आबद्ध है, उसके निर्णायक तत्व हम ही है, इसीलिए प्रगति के प्रसंग में, समानता की स्थापना और मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा 'अन्योन्याश्रित' है, अविच्छिन्न मूल्य है। इसे समझकर इसी दिशा में अन्तरात्मा की पुन प्रतिष्ठा इस आसन्न से मानवमात्र का उद्धार कर सकती है, किन्तु इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता नही है"[2]

**अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

शुक्ल जी अपनी कृतियों में उस वेदना को भी व्यक्त करते है, जिसमें मनुष्य नैतिक आचरण को छोड़कर, अनैतिकता का मार्ग अपनाता है, क्योंकि साहित्यकार समाज को सही दिशा में मोड़ना चाहता है। वह चाहता है कि मनुष्य सत्य के मार्ग पर चले। समाज के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करते है। उनकी रचना अक्षरों की आँच की कुछ पन्तियाँ–

**"है कोटि–कोटि बंदन सकंल्पी चरणों को**
**जो सधे हुए भीषण आंधी तूफानों में ।**
**है कोटि नमन उन विपुल अटल चट्टानों में**
**जो अविचल है भूचालों व्रज मुहानों में।"[3]** **अक्षरों की आँच, पृष्ठ 57**

वो अपनी रचना से देशवासियों को संदेश देते हैं कि चाहे जितनी भी कठिनाइयाँ आयें, उनका सामना करना ही मनुष्य का धर्म है। शुक्लजी अपनी रचना अक्षरों की आँच में कहते हैं कि परिस्थितियों तो आतीं हैं जब मनुष्य टूट जाता है मगर इन्सान को अपने संकल्पों पर अड़िग रहना चाहिए।

**मैं भी ये ऊँची मंजिल यूं ही छू सकता था**
**पर वैसाखी पर चलने की मेरी प्रकृति नही।** **अक्षरों की आँच, पृष्ठ 37**

'उजले में जो देखा' यह गद्यात्मक कृति है इसमें पचास से अधिक चिन्तनपरक निबंध संग्रहींत है। लेखक ने इन निबंधों में धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं मनोवैज्ञानिक आदि विषय पर चिंतन किया है। शुक्लजी ने अपने 'अहंकर' निबंध में समाज में फैल रही विषाक्त प्रवृत्तियों के लिए अहंकार को ही मुख्य उत्तरदायी माना है वे लिखते है–

**"आज हमारी तलाश हो किसी ऐसे कन्हैया की जो अहंकार के इन कालिय नागों को नाश कर सकें, हम खोजे किसी ऐसे शंभू–शकंर को जो नाप सके इन दर्पीले सांड़ों को, तभी हम सभ्यता का स्वाद ले सकते हैं तभी मानवीय–मूल्यों की सार्थक कल्पना की जा सकती है"[4]** **उजेले में जो देखा, पृष्ठ 51**

'सोच इष्टकारी हो' निबंध में शुक्लजी मनुष्य को समझाते हैं कि गलत अनुमान सदा शंका में रहना मनुष्य को प्रगति करने से रोकते हैं। असफलता के डर से परीक्षा ही न देना यह गलत है। शंका में हमेशा रहने से मनुष्य अपना अपनों का अहित करता हैं। नाकारात्मक भावनाओं को मन से निकाल देना चाहिए।

**इस निबंध का सारांश यह है कि "हम अभ्यास पूर्वक विकृत चिंतन की परिधि से बाहर निकलकर चेतना संकल्प–शक्ति और मनोबल को जगायें जिसमें हमारी सुख–समृद्धि और उत्कर्ष की समस्त संभावनायें निहित हैं।"[5]**
**उजेले में जो देखा, पृष्ठ 63**

इसी तरह वे धर्म क्या है? में सच्चे धर्म के बारे में बताते हैं। वे कहते हैं कि **"अपनी–अपनी भूमि जल,वायु, और भाव–स्वभाव के अनुरूप सभी धर्मों को फलने–फूलने की स्वायत्तता पर बल दिया। वे इसके पक्षधर थे कि अपनी–अपनी उपासना–पद्धति से प्रभु को पाया जा सकता है। इसके भिन्न–भिन्न नाम और उपाधियाँ होने पर भी वह प्रभु एक है, जैसे भिन्न–भिन्न उद्गमों के जल स्त्रोत सागर में मिलते है। पाखण्ड, अंधविश्वास से उसका कोई नाता नहीं। धर्म न तो किसी एक पुस्तक या पैगम्बर या देवदूत से आंका–हांका जाता है और न ही किसी पूर्वाग्रह–दुराग्रह या कट्टरपन का शिकार होता है। वह मजहब या रिलीजन का समानार्थी नहीं है। किसी भी दिशा से आने वाले अच्छे विचारों के प्रकाश–प्रवेश के स्वागतार्थ उसके आँगन द्वार सदा खुले रहते है।"** **उजेले में जो देखा, पृष्ठ 24,25**

**निष्कर्ष–** शुक्लजी ने आँक्षरों की आँच, उजेले में दो देखा, कुछ वालो राम, तुलसीतरंग, संदेसौ आदि अनेक रचनाएँ लिखी है। ये सभी रचनायें शुक्लजी की मानवीय अवधारणा को सिद्ध करती हैं।

आचार्य महावीर प्रसाद का कथन है "साहित्य समाज का दर्पण है" वह वही लिखता है जो वह महसूस करता है। यह कथन शुक्लजी के रचना संसार पर भी सिद्ध होता है। वे सम्पूर्ण मानव में नैतिकता, ईमानदारी, मानवीयता के गुणों का विकास करके मानवीय मूल्यों की स्थापना पर बल देते हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ल पं. श्रीनिवास, अक्षरों की आँच, 7,6, सं. प्रथम, 2057, जिला सहकारी प्रेस छतरपुर (म.प्र.)।
2. धर्मवीर भारती वाणी सं. चन्दकान्त बादिवेडलर खण्डः पाँच वाणी प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 2009 पृष्ठ सं. 205.
3. शुक्ल पं. श्रीनिवास, अक्षरों की आँच, 57,37, सं. प्रथम, 2057, जिला सहकारी प्रेस छतरपुर (म.प्र.)।
4. शुक्ल पं. श्रीनिवास, उजेले मे जो देखा, 51,सं. प्रथम, 2005 सार्थक प्रकाशन।
5. शुक्ल पं. श्रीनिवास, उजेले मे जो देखा, 5,63,सं. प्रथम, 2005 सार्थक प्रकाशन।
6. शुक्ल पं. श्रीनिवास, उजेले मे जो देखा, 24,25,सं. प्रथम, 2005 सार्थक प्रकाशन।

*****